Class B.Com II
Subject - MF I
Paper IV (S)
Topic - SIDBI
Lecture-Sequence - 13
By Dr C P Sahu
Marwari College Darbhanga

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक :- ①

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक की स्थापना, बैंकिंग अधिनियम 1989 का विधेयक पारित से हुआ। यह बैंक अपना कार्य 2 April 1990 से प्रारम्भ किया। इसे भारतीय औद्योगिक विकास बैंक के स्वामित्व में उसके सहायक बैंक के रूप में स्थापित किया गया।

लघु उद्योग विकास बैंक ऋण वितरण माध्यमों (राज्य वित्त निगम, राज्य औद्योगिक विकास निगम, व्यापारिक बैंक, सहकारी बैंक तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक) के माध्यम से वित्तीय सहायता प्रदान करता है। यह ऋणों का पुनर्वित्त, बिलों का बट्टा तथा पुनः बट्टा इत्यादि सुविधाएँ प्रदान करता है। लघु उद्योग विकास बैंक की निर्गमित पूंजी 450 करोड़ रुपये है जो 10 रुपये वाले 45 करोड़ अंशों में विभाजित है। स्थापना के समय 19.21% इसके द्वारा रख लिये गये शेष 80.79% हिस्सा केन्द्रीय सरकार के नियंत्रण वाली संस्था - जैसे बैंकों और बीमा कंपनियों में हस्तान्तरित कर दिया गया।

बैंक के उद्देश्य :-

(i) लघु उद्योग को प्रोत्साहित करना
(ii) वित्त की व्यवस्था करना
(iii) संस्थाओं के कार्यों के साथ समन्वय करना

बैंक की प्रगति :- अपने कम समय में ही उद्योगों के विकास का आधार बन गया है। 2003-04 तक बैंक द्वारा 8,224 करोड़ रुपये ऋणों की स्वीकृत की गयी जिसमें 4413 करोड़ रुपये उस समय वितरित की गयी। 2005-06 में इसके द्वारा 11,942 करोड़ रुपये स्वीकृत किये गये जिसमें 9,100 करोड़ वितरित किया गया।

Scanned with CamScanner

2010-11 में बैंक द्वारा स्वीकृत और प्रदत्त वित्तीय सहायता क्रमशः 42,223 करोड़ तथा 38,824 करोड़ रुपये थी।
बैंक का लक्ष्य सूक्ष्म, लघु और मध्यम उपक्रमों का इस रूप में आर्थिक विकास करना है कि यह रोजगार का सृजन कर सके और देश का संतुलित क्षेत्रीय विकास हो सके।

लघु उद्योग बैंक के कार्य निम्न हैं :-

(1) देश के प्राथमिक उधार संस्थाओं द्वारा लघु स्तर के उद्योग को दिये गये ऋणों एवं अग्रिमों का पुनर्वित्त प्रबन्ध करना और उनकी सहायता के लिए साधन उपलब्ध कराना।

(2) लघु स्तर क्षेत्र की औद्योगिक इकाईयों द्वारा निर्मित या विक्रय की गयी मशीनरी का बट्टा या पुनः बट्टा करना।

(3) राष्ट्रीय महिला उद्यम निधि एवं महिला विकास निधि और सिडबी उधार देने वाली एजेंसियों द्वारा बीज पूँजी योजनाओं के बीज पूँजी ऋण सहायता देना।

(4) बैंक ...

(4) बैंक राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम को लघु स्तर क्षेत्र की औद्योगिक इकाइयों के लिए लिजिंग, किराया-खरीद और विपणन सहायता के लिए वित्त की व्यवस्था करना

(5) बैंक राज्य लघु उद्योग विकास निगमों को दुर्लभ कच्चे माल और लघु स्तर क्षेत्र की औद्योगिक इकाइयों के उत्पादों के विक्रय के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना।

(6) लघु स्तर क्षेत्र की औद्योगिक इकाइयों द्वारा निर्यात के लिए निर्मित वस्तुओं के वित्त प्रबन्ध के लिए प्राथमिक उधार संस्थानों को प्रत्यक्ष सहायता ~~एवं पुन~~ प्रदान करना

(7) छोटे पैमाने की औद्योगिक इकाई को आढ़त क्रियाएँ उपलब्ध कराना।

बैंक को स्थापित करने का उद्देश्य था कि लघु स्तर क्षेत्र को वित्तीय सहायता की अधिक मात्रा में सुनिश्चित किया जा सके।

Scanned with CamScanner

बैंक ने लघु इकाइयों को टेक्नोलॉजी उन्नति और आधुनिकीकरण के लिए कई उपाय किये गये। स्थानीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में लघु स्तर इकाइयों के विपणन को प्रोत्साहित करता है। यह बड़े पैमाने पर रोजगार प्रेरित उद्योगों को प्रोत्साहन करता है विशेषकर नगरीय क्षेत्रों में रोजगार के अवसर में वृद्धि करता है। इस तरह यह ग्रामीण जनसंख्या को नगरों तथा महानगरों की ओर प्रवासन को रोकता है।

सिडबी की प्रगति एवं स्थापना के समय से अबतक स्वीकृत एवं वितरित किये गये ऋणों का विवरण निम्नतालिका से स्पष्ट कर सकते हैं—

वर्ष	स्वीकृत ऋण	वितरित ऋण
1990-91	2408.7	1838.5
1993-94	3356.3	2672.7
94-95	4706.3	3389.8
95-96	6085.6	4800.8
96-97	6485.3	4584.7
97-98	7484.2	5240.7
98-99	8679.8	6285.2
1999-2000	10264.7	6963.5
2000-01	10820.6	6441.4
01-02	9025.5	5919.3
02-03	10903.7	6789.5
03-04	8246.7	4414.
04-05	9091.	6188
05-2006	11942.	9050
स्रोत —	आर्थिक समीक्षा —	2006-07

इसप्रकार विगत एक दशक की अवधि में सिडबी (Small Industries Development Bank of India - SIDBI) लघु क्षेत्र के विकास के लिए प्रमुख आधार स्तम्भ बन चुका है।

भारतीय लघु उद्योग क्षेत्र सिडबी को भारतीय औद्योगिक विकास बैंक से अलग करके एक स्वतंत्र वित्तीय संस्थान के रूप में विचार कर रहा है। फिक्की द्वारा कराये गये एक सर्वेक्षण के अनुसार सिडबी को स्वतंत्र रूप प्रदान करके उसके कार्य निष्पादन को प्रभावी एवं उपयोगी बनाया जा सकता है।

— x —

Scanned with CamScanner